रिकाडः -धीरज धर मनवा••• ओम शान्ति प्रातः क्लास 16-6-67

मीठे-2 सिकीलधे बच्चो ने गीत सुना। तुम बच्चो के जो भी जन्मजन्मान्तर के दुःरव है वो इस गीत की
दो लाईनो के सुनने से ही दूर हो जाने चाहिये। तुम जानते हो कि अभी हमारा दुःरव का पाॅट पुरा होता
है और अभी सुरव का पाॅट शुरु होता है। जो पुरी रीती नही जानते है वो किसी नां किसी बात मे दुःरव
जरुर देरवते है।यहां बाबा के पास आने पर भी कोई नां कोई प्रकार का दुःरव भोसगा। बाबा समझ
सकते है कि बच्चो को बहुतत कलष होती होगी। जब तीर्थ यात्राओं पर जाते है तो कहीं-2 भीड़ अधिक होती
है तो भी बहुत कतलश्च होती है। तो कहते है कि यहां तो नाहक आये। बहुत भीड़ है।पछताते है
बहुत भीड लग जाती है। बरसात लग जाती तूफान लग जाता,जो भक्त होगें वो तो कहेंगे कि क्या हर्जा है भ
भगवान पास जाते है। भगवान समझ का ही यात्रा पर जाते है। ढेर के ढेर है भगवान मनुष्यों के।ठिक्कर
भित्तर मे भी भगवान है। फिर जो अच्छे मजबूत होते है तो कहते है कि कोई हर्जा नही है। अच्छे काम
मे हमेशा विघ्न पड़ता है। वापस लोट कर थोडेई जावेंगें। कोई-2 तो लोट कर भी आ जाते है2 कब विघन
पड़ता है कब नही भी पड़ता है। बाप कहते है बच्चो यह भी तुम्हारी यात्रा है।तुम कहेंगें हम बेहद के
बाप पास जाते है। बाप सबका दुःरव हरने वाला है।यह निश्चय है? आजकल देरवो मधुवन मे कितनी
भीड़ है। = बाबा को ओना रहता है। बहुतो को तकलीफभी होती होगी। जमीन मे सोना पड़ता
है। बाबा थोडेई चाहते है कि जमीन पर बच्चो को सुलावें। परन्तु ड्रामा अनुसार भीड हो गई है। कल्प पहले
भी हुई थी फिर भी होगी।इसमे कब भी दुःरव नही होना चाहिये।गयह भी जानते हो कि पढाने वाला कोई
तो राजा बनेगा कोई तो रंक भी बनेगा। कोई का ऊंच मतबा कोई का कम। परन्तु वहां सुरव जरुर होगा।
****
यह भी बाबा जानते है कि कई तो बहुत कच्चे है जो कुछ भी सहन नही कर सकते है।उनको कुछ
तकलीफ होती होगी। कहेंगें हम तो नाहक ही यहां आये। यां कहेंगें कि हमको टरचर जोर करके ले आई है।
ऐसे भी कहने वाले होगें। टीचर ने नाहक ही यहां ला फंसाया है। इस समय की पढाई से कोई
तो राव बनने वाले है कोई तो रंक। भविष्य मे बनेंगे। यहां के रंक राव मे और वहां के रंक राव मे रात
दिन का फर्क है। यहां के राव भी दुःरवी है तो रंक भी दुःरवी है। वहां राव से लेकर रंक तक सभी दोनो
सुरवी होते है। यहां तो है ही पतित विकारी दुनियां नां।भल किसके पास बहुत धन है। बाप समझाते
है कि सब मिट्टी मे मिल जाने का है। यह शरीर भी खत्म हो जावेगा। आत्मा तो मिटी मे नही मिलती।
कितने बडे-2 शाहुकार है बिड़ला जैस इनको क्या कहेंगें? बिचारा घोर अन्धेरे मे है। उनको क्या पता कि
***** * ***********
यह पुरानी दुनियां बदल रही है। पता होता तो फट से आ जाते। कहते भगवान आया हुआ है फिर हम
यह मन्दिर आद क्यो बनावें? निश्चय होगा तो अच्छी रीती कोशिश करेगा जाचं करने की। ओना वाला
भी जरुर है। कहां जावेंगें जबकि सदगति दाता है ही एक। भल कोई यहां से तोबा भी कर जावे परन्तु
जावेंगे कहां। सिवाय बाप के कोई को सदगति मिल नही सकती। अगर कोई से रुठ गया तो कहेंगें सदगति
****
से रुठ गया।ऐस बहुत रुठते रहेंगें तो गिरते रहेंगें। आश्चर्यवत सुन्नती निश्चय होवन्ती••• कोई तो
** * * ** *
समझते है कि इन बिगर कोई रस्ता नही है। उनसे ही सुरव और शान्ति का वर्सा मिलगा। इस बिगर
सुरव शान्ति मिलना असम्भव है असम्भव है। जब धन हो जो बहुत सुरव मिले। धन से ही सुरव होता है नां।
वहां(शान्तिः धाम)तो आत्मायें शान्ति धाम मे रहती है। कोई कहें हमारा पाॅट होता तो सदेव हम यहां
रहते। परन्तु ऐस कहने पर थोडेई रख होता। बच्चो को समझाया गया। फिर बना बनाया रेवल है। बहुत है जो
किसी नां किसी संशय मे आकर छोड जाते है। यां आपस मे रुठ कर छोड देते है। अब तुम यहां फूल
बनने आये हो। महसूस करते हो कि बेरावर हम कांटो से फूल बन रहे है। फूल जरुर बनना है।कोई को
कुछ संशय होता है तो आपस मे लड पडते है। आपस मे कोई की अनबनत हो जाती है। फलानी यह करती
है यह ऐसी है। इसलिये ही हम नही आवेंगें। बस रुठ कर जाकर घर मे बैठ जाते है। बाप कहते है और

कोई से तो मल रखो एक बाप से नही रखो। बाबा तो वार्निंग दे देते है। सजाय तो बहुत कड़ी है।
गर्भ मे भी जो सजाय मिलती है वो भी सा0 हो कर ही मिलती है। बिगर सा0 के सजा मिल नही सकती।
यहां का भी सा 0होगा।तुमने पढते-2 आपस मे लडाई झगडा लड़ कर पढाई छोड दी। तुम बच्चे समझते
हो कि हमको कादर से पढ़ना है। पढाई कब छोडनी नही है। तुम यहां पर पढते ही हो मनुष्य से देवता
बनने।ऐसे-ऊंच ते ऊंच बाप के पास तुम मिलने आते हो। कब फिर जास्ती भी आ जाते है। ड्रामा अनुसार कुछ
तकलीफ हो पड़ती है। बच्चो को अनेक तूफान आते है फालानी चीज नही मिली, वो तो कुछ भी नही है।
मौत का समय जब ओवगा तब क्या होगा। इस पिछाडी के पार्ट को ही कहा जाता है खूने नाहक खेल।
अचानक बाम्बस गिरेंगे ढेर के ढेर मरेंगे। यह खूने नाहक हुआ नां। हमने कोई गुनाह थोडेई किया है।
खूने नाहक तो बहुत होगा। अज्ञानी मनुष्य तो ऐसे ही कहेंगे। तुम बच्चो को बहुत खुशी है। कहते भी
है ब्र, कु, कु, है ही दुनियां का विनाश करने के लिये।सच्च-2 तुम विनाश के लिये ही निमतबनी हो नां।
अनेक धर्मों का विनाश नां हो तो स्थापना ही कैसे हो। सतयुगमे एक आदी सनातन देवी देवता धर्म था
किसीको क्या पता कि सतयुग की आदि मे क्या था। वो तो मनुष्य समझते है=समझते है नां। अभी तुम जानते
हो कि सतयुग के आगे कलयुग था। और यह संगम युग है। इस संगम युग को तुम्हारे सिवाय और कोई
भी नही जानते है। यह है पुरषोतम संगम युग। बाप आय ही है सबको पुरषोतम बनाने। सबका बाप है नां।
ड्रामा को तो तुम जान गये हो नां। सब तो सतयुग मे नही आवेंगे नां। इतने 500करोड़ थोडेई सभी
सतयुग मे आवेंगे। यह सब है डिटेल की बाते। बहुत बच्चियां है जो कुछ भी समझती नही है। भक्ति
मार्ग की आदत पडी हुई है। ज्ञान बुधी मे बैठता ही नही है।बहुतो को आते हुये देख कर चल पड़ते है।
टीचर भी कहती है कि चल कर देखो तो सही नां। यहां आय और आराम करने की पुरी जगह नही मिली
** * * ** * * * * * **** *** * * * * * * *
तो कहेंगे कहां हमको ले आई है। यह सब होता है। ड्रामा में नूंधहे।बाबाकिनको बुलाते थोडेई है। इसको
जाता है ड्रामा। भक्ति मार्ग की टेव पड़ी हुई है। कहते है कि भगवान क्या नही कर सकते है।मेरे हुये को
जिन्दा कर सक्ते है। बाबा के पास आते है कहते है फलाने ने मेरे हुये को जिन्दा किया। तो क्या
ऐसा भगवान नही कर सकता है। कोई ने अच्छा काम किया तो बस उसकी ही महिमा करने लग जाते है।
फिर उनके हजारोंफालोवर्स बन जावेंगे।शंकराचार्य आद पास कितने लाखो मनुष्य जाते है। कहते है फलाना
गीता पर भाषण करता है तो कितनो ढेर आते है। तुम्हारे पास तो बहुत थोडे आते है। भगवान पढाते
*********.**
है फिर भी इतने थोडे से क्यो? ऐसे बहुत कहते है। और यहां तो मरना होता है नां। वहां तो कनरस है।
*** * * ****** ******* * *
बडे भभके से बैठ कर गीता सुनाते है भक्त लोग सुनते है। यहां पर कनरस की बात नही। तुमको तो सिर्फ
कहा जाता है कि बाप को याद करो। और 84का चक्र बुधी मे रखो बस। हम अभी वापस जाते है। रोज-2
समझाते रहते है कि सिर्फ बाप को याद करो। गीता मे भी यह अक्षर है कि मनमनाभव। बाप को याद करो
तो विकर्म विनाश होगें। बाप कहते है अच्छा ब्राहम्णी से वां सेन्टर से रुस कर जाते हो।अच्छा यहि तो एक
काम करो कि और संग तोड अपने को आत्मा समझ बाप संग जोड। ये निश्चय कर फिर चले जाओ
विलायत फिर भल कहआओ भी नही। वहां ही बैठ हुये सिर्फ एक बाप को याद करो। अपने को आत्मा
समझ बाप को याद करना है। बाप ही पतित पावन है। बस बाप को याद करते रहो। स्वदर्शन चक्र
फिराओ। इतना याद किया तो भी स्वर्ग मे जरुर आवेंगे। बाकी पद तो पुरषार्थ अनुसार ही मिलना है
प्रजा भी बनानी पडे। नही तो राजाई किस पर करे। जो बहुत मेहनत करते है उच पदभी वो ही पावेंगे।
उच पद के लिये ही कितना माथा मारते है। पुरुषार्थ विगर कोई भी रह नही सकते। तुम बच्चे जानते
हो कि ऊंचते ऊंच पतित पावन बाप ही है। मनुष्य महिमा भल गाते हैपरन्तु अर्थ नही समझते है।
अनर्थ ही निकालतेरहते है। बहुत कितना शाहुकार था। बहुत महिमा थी।भारत है स्वर्ग आफ वेल्ड वो सात
वन्डर्स है माया के।मारे ड्रामा मे ऊंचे ते ऊंचा ... है स्वर्ग। ऊंचे ते ऊंचा भगवान फिर ऊंचे ते ऊंचा

भगवान है फिर ऊचे ते ऊंचा स्वर्ग है। नीच ते नीच है नर्क। बाप ही नीच ते नीच से फिर ऊचे ते ऊचे ले जाते है। अभी तुम बाप के पास आये हो जानते हो कि मीठा बाबा जो ऊचे ते ऊचा ले जाते है उनको कोन छोडेगा। भल कहीं भी बाहर मे जाओं सिर्फ एक बात को याद करों। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ही श्रीमत देते है। भगवानोवाच्य। नां कि ब्रहमा भगवानोवाच्य। मनुष्य तो बाते बनाते रहते है। (ड्रामा मे सबेस जास्ती बाते बनाने वाला कोन? व्यास भगवान।) क्या-2 बाते बैठ बताई है। पवन से हनुमान पैदा हुआ। गनेष हाथी की सुंड वाला। अब मनुष्य को भी फिर हाथी की सूंड वाला कहा से आया। असम्भव बाते है। मनुष्य कितना खेंचा करते है। सब मनुर्षों का खेंचा मिला कर करोड खंचा हो जावे। बेहद का बाप तुम बच्चों से पुछते है कि मै तो तुमको इतना शाहुकार बना कर गया फिर तुमने इतनी दुर्गति को कैस पाया? सुनते तो ऐसे है जैस कुछ भी सुनते नही है। तो बच्चो को थोडी तकलीफ होती है। तुम बच्चो को थोडी तकलीफ होती है। सुख्खः दुःख स्तुती निन्दा यह सब सहन करना पड़ता है। शिव बाबा को तो कुछ कोई कर नही सकते है। यहां के तो मनुष्य ही सैर है। प्राईमिस्टर को भी पत्थर मारने मे देरी नही करते है। कहते है स्कूल के बच्चो का न्यू बल्ड है। बाकी महिमा करते है उनकी। समझते है कि इन लोगों का न्यू बल्ड है। परन्तु वो ही स्टुडण्टस दुःख देने वाले निकल पड़ते है। कालेजो को आग लगा देते है। यह तो जैस कि बिच्छु टिण्डन है। कामी कुत्ता भी कहते है नां। सबनाम आ जाते है। एक दो को बा गालियेदेते रहते है। कोई जज ने कहां ओर गधे के बच्चे। उसने कहा कि हम गधा तो बाप भी गधा ही ठहरे। कोई सयाणा बच्चा होतो झठ से बाप को कह देवे कि आप कहते हो कि गधे का बच्चाहो? यह तो आप अपने को ही गाली देते हो। तो बाप बैठ समझाते है कि दुनियां का क्या हाल है। बाप कहते है कि तुम कितन बेसमझ बन पडे हो! बाबा ने कहा था कि तुम यह लिख सकते हो कि ड्रामा ऐक्टर होकर और वो ड्रामा के आदि मध्य अन्त को मुख्य ऐक्टर को नही जाने तो इडियट ठहरे नां। यह है बेहद की बात। बडे ते बडा कोन उसकी बायोग्राफी जाननी चाहिये नां। कुछ भी नही जानते। ब्र, वि, शं का पर्पट क्या पॉट है। ओर धर्म स्थापक का क्या पॉट है। मनुष्य कुछ भी नही जानते है। मनुष्य तो सब अन्धश्रधा मे आकर सबको ही परसेप्टर कह देते है। वास्तव मे तो परसेप्टर गुरु को कहा जाता है नां कि धर्मस्थापक को। मनुष्य तो सबको गुरु कह देते है। सब का सदगति दाता तो एक ही परमपिता परमात्मा है। वो परमगुरु भी है। फिर नालेज फुल भी है। तुम बच्चो को पढाता भी है। उनका पॉट ही वण्डरफुल है। धर्म भी स्थापन करते है तो सबधर्मो को खलास भी करते है। जो सब धर्मो को खलास भी करते है। (स्थापना ओर विनाश करने वाले को ही गुरु कहेंगे।) बाप कहते है कि मै कालो का काल हूं। एक धर्म की स्थापना ओर बाकी सबधर्मो का विनाश हो जायेगा अर्थात इस ज्ञान यज्ञ मे स्वाहा हो जावेंगे। फिर नां कोई लडाई लगेगी नां ही यज्ञ रचा जावेगा। तुम सारे विश्वकी आदि मध्य अन्त को जानते हो। ओर तो सब नेती-2 कहते रहते है। तुम ऐसे थोडेई कहेंगे। बाप बिना ओर कोई समझा नही सकते। तो तुम बच्चो को बडी खुशह होनी चाहिये। परन्तु माया का सामना ऐसा होता है जो याद से हटा देता है। तुम बच्चो को तो दुःख सुख मान-अपमान, वैस तो कोई कर यहां अपमान किया नही जाता है। अगर कोई भी पाप है तो बापको रिपोट करनी चाहिये। रिपोट नही करते है तो बडा पाप लगता है। बाबा को सुनाने पर झट उनको सावधानी मिलेगी। इस सैजन से छिपाना नही चाहिये। बडा भारी सैजन है। ज्ञान इजेक्शन जिसको ही ज्ञान अंजन भी कहते है। अंजन को ज्ञान सुरमा भी कहते है। जादु आदकी तो बात ही नही है। बाप कहते है कि मै आया हुआ हूं तुमको पतित से पावन होने की युक्ति बताने। पवित्र नही बनेंगे तो धारना भी नही होगी। ऐस काम के कारन ही फिर पाप होते है। इस पर ही जीत पानी है। अच्छा विदाई